पाठ - 22

विश्व के सम्मुख प्रमुख चुनौतियाँ

आइए जानें –

- पर्यावरण क्या है, यह कैसे प्रदूषित होता है?
- प्रदूषित पर्यावरण का मानव पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- वैश्वीकरण से क्या अभिप्राय है, इसके क्या दुष्परिणाम हैं?
- आतंकवाद क्या है, यह विश्व के लिए खतरा क्यों है?

वर्तमान समय में सभी राष्ट्र एक-दूसरे पर निर्भर हैं। वे एकाकी नहीं रह सकते। उनकी नीतियाँ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से निर्देशित व प्रभावित रहती हैं। अनेक समस्याएँ ऐसी हैं, जिनका सामना सभी राष्ट्रों को समान रूप से करना पड़ता है। ये समस्याएँ विश्वव्यापी हैं। यदि कोई राष्ट्र इनके समाधान के लिए एकाकी प्रयास करते हैं तो वे उसमें अधिक सफल नहीं हो पाएँगें। इनका समाधान करने के लिए सभी राष्ट्रों को संयुक्त प्रयास करना चाहिए।

पर्यावरण

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है - परि + आवरण। परि का अर्थ है - चारों ओर से, आवरण का अर्थ है - घेरे हुए। अर्थात् वह आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है, पर्यावरण कहलाता है।

पर्यावरण अनेक कारकों का सम्मिश्रण है। कोई भी बाहरी बल, पदार्थ या परिस्थिति जो किसी जीव को घेरे हुए हो तथा उसके जीवन को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता हो कारक कहलाता है। पर्यावरण के विभिन्न कारकों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है - (1) जैविक कारक (पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, सूक्ष्म जीव आदि), (2) अजैविक कारक (जल, खनिज, मृदा, वायु, सौर ऊर्जा आदि)

पर्यावरण के उपरोक्त दोनों कारक एक-दूसरे से भिन्न किन्तु परस्पर संबंधित होते हैं। प्राकृतिक परिस्थितियों में जीव का जीवन किसी एक कारक से प्रभावित न होकर समस्त पर्यावरणीय कारकों के योग से प्रभावित होता है। ये कारक जीव को प्रभावित करने के साथ-साथ परस्पर एक-दूसरे को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार पृथ्वी पर संतुलन बना रहता है; परन्तु कई प्राकृतिक एवं मानव निर्मित कारणों से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है, जिसके कारण हमारा पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

वायु, जल एवं मृदा के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों में होने वाला ऐसा अवांछित परिवर्तन जो मनुष्य के साथ ही संपूर्ण परिवेश के प्राकृतिक तत्वों को हानि पहुँचाता है, प्रदूषण कहलाता है।

प्रदूषण के प्रकार

जल प्रदूषण

जल ही जीवन है। प्रकृति ने मानव को सतही एवं भूमिगत जल के रूप में असीमित जल के भंडार दिए हैं, लेकिन मानव निरंतर अपनी क्रियाओं द्वारा जल को प्रदूषित कर रहा है। जल प्रदूषण वह स्थिति है, जिसमें जल के भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणों में नकारात्मक परिवर्तन हो जाता है तथा जल, मानव समुदाय तथा जीवजन्तु व वनस्पति जगत पर अपना हानिकारक प्रभाव डालने लगता है।

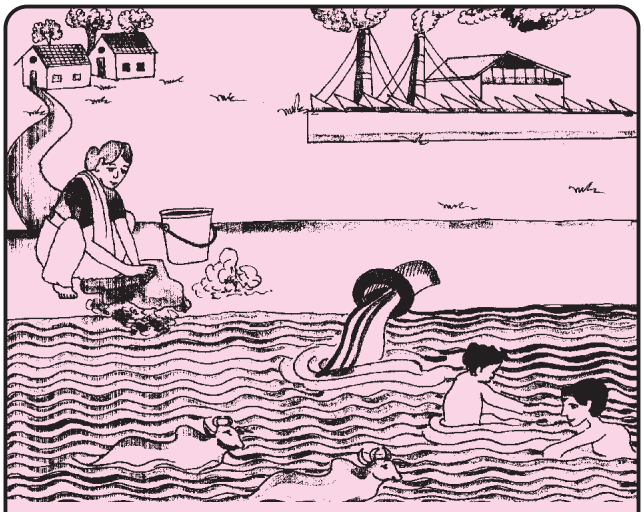

चित्र-54 : जल प्रदूषण

जल प्रदूषण के स्त्रोत

प्राकृतिक स्त्रोत – कुछ प्राकृतिक पदार्थ भी जल को प्रदूषित करते हैं। इनमें विभिन्न गैसें, मृदा, खनिज, वनस्पति, मृत जीव-जन्तु आदि हैं। मृदा अपरदन से भी जल प्रदूषित होता है।

मानव स्त्रोत – वर्तमान समय में जल प्रदूषण का प्रमुख स्त्रोत मानवीय क्रियाकलाप ही है। नगरीकरण, कृषि, औद्योगिक, सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों के कारण अनेक प्रकार के प्रदूषक जल को प्रदूषित करते रहते हैं। मानव द्वारा जल प्रदूषण के प्रमुख कारण निम्नांकित हैं –

- **मल –** घरेलू एवं सार्वजनिक शौचालयों से निकले मल-मूत्र को नदियों एवं जलाशयों में डाला जाता है।
- **घरेलू अपमार्जक –** घरों, होटलों में बर्तनों, फर्श व कपड़ों की सफाई करने में साबुनों व अपमार्जकों का प्रयोग किया जाता है।
- **औद्योगिक अपशिष्ट –** विभिन्न उद्योग जल प्रदूषण के प्रमुख स्त्रोत हैं। उद्योगों से निकले जल में अनेक घातक रासायनिक पदार्थ मिले होते हैं। यह प्रदूषित जल सीधे नदी, तालाब में प्रवाहित कर दिया जाता है।

जल प्रदूषण का प्रभाव

मानव पर जल प्रदूषण का बहुत घातक प्रभाव पड़ता है। हैजा, अतिसार, बुखार, पेचिस, पीलिया, मलेरिया आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

जल प्रदूषण को रोकने के उपाय

- उद्योगों के रसायन एवं गंदे अपशिष्टयुक्त जल को नदियों, सागरों, नहरों, झीलों आदि में सीधे न डाला जाए।
- शवों को जलाने के लिए विद्युत शवदाह गृहों का निर्माण किया जाना चाहिए।
- मल विसर्जन से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए सुलभ इन्टरनेशनल जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद लेनी चाहिए।

वायु प्रदूषण

सभी जीवधारियों के जीवन के लिए वायु आवश्यक है। बिना हवा के हमारा जीवन संभव नहीं है। वायुमंडल में अनेक प्रकार की गैसें पाई जाती हैं, जैसे ऑक्सीजन, कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन आदि। ये गैसें एक निश्चित मात्रा व अनुपात में पाई जाती हैं। गैसों के इस अनुपात में थोडा सा भी परिवर्तन वायुमंडल की संपूर्ण व्यवस्था को प्रभावित करता है, जिसका सीधा प्रभाव जीव जगत पर पड़ता है। प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से वायु के दूषित होने की प्रक्रिया वायु प्रदूषण कहलाती है।

चित्र-55 : वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण के कारण

1. प्राकृतिक कारण -

वायु प्रदूषण प्राकृतिक कारणों से भी होता है, जैसे ज्वालामुखी के फूटने पर उसमें से निकलने वाली गैसें, धुँआ, चट्टान के टुकड़े, राख आदि हवा में मिलकर प्रदूषण फैलाते हैं।

2. मानवजनित कारण –

वायु प्रदूषण के प्रमुख मानवजनित कारण निम्नांकित हैं –

अ. वाहनों द्वारा – वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण वाहनों से निकलने वाला धुँआ है। इस धुँए में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें होती हैं, जो वायु को दूषित करती हैं।

ब. उद्योगों द्वारा - उद्योगों की चिमनियों से निकलने वाली अनेक विषैली गैसें, रासायनिक उर्वरक, कारखानों द्वारा छोड़े जाने वाले प्रदूषक जैसे अमोनिया, हाइड्रोकार्बन आदि के कारण भी वायु दूषित होती है।

स. घरेलू कार्यों द्वारा – घरेलू कार्यों जैसे भोजन पकाना, पानी गरम करना आदि में कोयला, लकड़ी, मिट्टी का तेल, कृषि अवशिष्ट पदार्थों आदि का ईंधन के रूप में प्रयोग होता है। इनके जलाने से उत्पन्न धुँआ वायु को प्रदूषित करता है।

वायु प्रदूषण के प्रभाव

वायु प्रदूषण का सर्वाधिक प्रभाव मनुष्य के श्वसन तंत्र पर पड़ता है। प्रदूषित वायु के कारण श्वास संबंधी विभिन्न रोग जैसे अस्थमा, तपेदिक, फेंफड़ों का कैंसर आदि हो जाते हैं।

वायु प्रदूषण रोकने के उपाय

वायु प्रदूषण आज एक भीषण समस्या बन चुकी है। शुद्ध वायु के अभाव में मानव जीवन असंभव है। अत: वायु प्रदूषण को रोकने के लिए निम्नांकित उपाय किए जाने आवश्यक है –

- उद्योगों में चिमनियाँ अत्यधिक ऊँची बनाई जाएँ तथा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से निरीक्षण कराया जाए।
- कच्चे कोयले व कच्ची लकड़ियों के जलाने पर प्रतिबंध लगाया जाए।
- खुले सीवेज आदि को बंद किया जाए।
- जनमानस में जागरूकता लाई जाए तथा वनों को काटने से रोका जाए।
- प्रभावी कानून बनाया जाए।

ध्वनि प्रदूषण

शोर एक अवांछित ध्वनि है जो मनुष्य के कानों को अप्रिय महसूस होता है। अधिक शोर के कारण मानसिक तनाव बढ़ता है, फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के मनोरोग जन्म ले लेते हैं।

उक्त प्रदूषण के नियंत्रण के लिए लोगों में जागरूकता और सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण को भूमण्डलीकरण भी कहते हैं। वैश्वीकरण के निर्माण की प्रक्रिया पर यदि हम

विचार करें तो पाएँगे कि कच्चा माल किसी एक देश में मिलता है, इस कच्चे माल से वस्तुओं को बनाने की तकनीक और ज्ञान किसी दूसरे देश के पास होता है तथा कच्चे माल और तकनीक का प्रयोग कर उत्पादन किसी तीसरे देश में होता है। ऐसी उत्पादित वस्तुओं का वितरण विश्व के कई देशों में होता है। इस प्रकार जो वस्तु हम खरीदते हैं उस वस्तु के निर्माण में कई देशों का सहयोग रहता है। विश्व के विभिन्न देशों में रहने वाले लोगों की पारस्परिक निर्भरता केवल उत्पादित वस्तुओं तक सीमित नहीं है, अपितु वे एक-दूसरे से शिक्षा, कला, साहित्य, तकनीक, विज्ञान आदि क्षेत्रों में भी एक-दूसरे पर निर्भर हैं। देशों और लोगों के बीच व्यापार, पूँजी निवेश, यात्रा, पर्यटन, खेलकूद और अन्य प्रकार के माध्यमों से जो विभिन्न अन्तर्क्रियाएँ होती हैं, ये वैश्वीकरण के परिचायक हैं।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में देश एक-दूसरे पर परस्पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच दूरियाँ घट जाती हैं। एक देश अपने विकास के लिए अन्य देशों पर निर्भर रहने लगता है।

इस प्रकार पूरे विश्व में एक केन्द्रीय व्यवस्था का होना है। घरेलू बाजार में जो बाजार शक्तियाँ क्रिया करती हैं, उन्हीं का राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर विस्तार ही वैश्वीकरण है।

वैश्वीकरण से लाभ

- वैश्वीकरण के कारण पूँजी का प्रवाह बढ़ जाता है।
- अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होती है।
- अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और प्रतियोगिता का विकास होता है।

वैश्वीकरण में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ वे कम्पनियाँ होती हैं, जिनका कारोबार एक देश से अधिक कई देशों में होता है। भारत में भी विश्व की अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भारत में काफी उद्योग स्थापित किए हैं तथा पूँजी निवेश भी किया है।

वैश्वीकरण का प्रतिकूल प्रभाव

- **घरेलू उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव** - वैश्वीकरण के अन्तर्गत शक्तिशाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगमन से कमजोर घरेलू उद्योग बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ प्रतिस्पर्धा न कर पाने के कारण धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं।
- **आय-वितरण की विषमता** -घरेलू उद्योगों की समाप्ति के कारण रोजगार के अवसरों में कमी आई, जिससे आय-वितरण की विषमता की खाई अधिक चौड़ी हो रही है।

- **उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार** – बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आक्रामक प्रचार-प्रसार शैली ने देश में उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार किया है।
- **विलासितापूर्ण वस्तुओं की भरमार** – वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप आज देश में आम उपभोग की वस्तुओं की तुलना में विलासितापूर्ण वस्तुओं की भरमार हो गई है।

वैश्वीकरण दो क्षेत्रों पर बल देता है– उदारीकरण और निजीकरण। उदारीकरण का अर्थ है औद्योगिक, सेवा क्षेत्र और व्यापार से संबंधित नियमों एवं कानूनों के बंधनों में ढील देना और विदेशी कंपनियों को घरेलू क्षेत्र में व्यापारिक और उत्पादन इकाईयाँ लगाने हेतु प्रोत्साहित करना। निजीकरण का अर्थ है कि निजी क्षेत्र की कंपनियों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की अनुमति प्रदान करना, जिनकी पहले अनुमति नहीं थी। इसमें सरकारी क्षेत्र की कंपनियों की संपत्ति एवं संचालन को निजी क्षेत्र को सौंपना भी सम्मिलित है।

आतंकवाद

इक्कीसवीं शताब्दी में आतंकवाद वैश्विक होता जा रहा है। विगत 20 वर्षों में विश्व में आतंकवादी घटनाओं में तेजी से वृद्धि हुई है।

आतंकवाद अपने वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला बलपूर्वक गैर कानूनी तरीका है।

शांति व्यवस्था भंग करने एवं शासन को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से आतंकवादी, हिंसात्मक गतिविधियाँ करते हैं। आतंकवाद, लोकतंत्र और मानवता के विरुद्ध अपराध है। आतंकवादी अपने जीवन की परवाह न करते हुए मानव जीवन के विरुद्ध क्रूरता का बर्ताव करते हैं तथा चारों ओर रक्तपात, विनाश एवं अराजकता पैदा करते हैं। ये बैलेट (मतपत्र) के विरुद्ध बुलेट (गोली) के सिद्धांत में विश्वास करते हैं। ये विमान अपहरण, आक्रमण, हत्याएँ, भयदोहन, डाँट-डपट आदि का सहारा लेते हैं।

कई बार आतंकवादी धार्मिक उन्माद से ग्रस्त होकर निर्दोष लोगों की जान लेने के लिए कार्य करते हैं। अपनी गतिविधियों द्वारा आतंकवादी समाज और देश में अलगाव पैदा करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आतंकवादी निर्दोष लोगों की हत्या और समाज में दशहत फैलाकर गैरकानूनी तरीकों से अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले कार्य करते हैं। जब आतंकवादियों को किसी बाह्य देश का सहयोग और प्रोत्साहन मिलता है तो उसे विदेशी राज्य द्वारा प्रायोजित और समर्थित आतंकवाद कहते हैं। आतंकवादी एक व्यक्ति को मारकर दस लोगों को डराना चाहते हैं। यह मनोवैज्ञानिक युद्ध की एक तकनीक है। ये नेताओं, संस्थाओं, पुलिस, सैनिकों आदि पर हमला करते हैं, क्योंकि ये सब राज्य सत्ता के प्रतीक हैं। वे जनता में असुरक्षा की भावना पैदा कर सरकार एवं

व्यवस्था को बिखराने का प्रयास करते हैं।

वर्तमान में आतंकवादी मजहब के नाम पर सांप्रदायिक हिंसा तथा घृणा फैलाते हैं। जैसे- ओसामा बिन लादेन द्वारा 'अल-कायदा' नामक आतंकवादी संगठन बनाकर विश्व स्तर पर आतंकवादी हमले एवं गतिविधियाँ की जा रही हैं। इसी संगठन के आतंकवादियों द्वारा 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के न्यूयार्क में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर को एक अपहरित विमान टकराकर ध्वस्त किया गया था।

चित्र-56 : वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आतंकवादी हमले के बाद की स्थिति

आतंकवादियों के कार्यों का स्वरूप

- आतंकवादियों के कार्य राज्य और समाज के विरुद्ध होते हैं।
- इनके कार्यों का राजनीतिक उद्देश्य होता है।
- इनके कार्य अवैध एवं गैर कानूनी होते हैं।
- आतंकवादी सामान्य जनता में भय पैदा करते हैं।
- आतंकवादी अपने कार्यों को हिंसक तरीके से करते हैं।
- आतंकवाद बुद्धिसंगत विचार को समाप्त कर देता है।
- सुरक्षा बल के मनोबल को गिराने का प्रयास करते हैं।
- आतंकवादी मजहबी उन्माद पैदा कर उसका प्रयोग अपने लिए करते हैं।
- देश की सुरक्षा, शांति और अखंडता के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं।
- देश की अन्य अलगाववादी शक्तियों को भड़काते हैं।

भारत में आतंकवाद

आज विश्व के सभी देशों के लिए आतंकवाद प्रमुख चुनौती बन गया है। भारत भी पिछले कुछ दशकों से आतंकवादी गतिविधियों से प्रभावित रहा है। कुछ विरोधी एवं पड़ोसी देश भारत में कट्टरपंथी लोगों को आतंकवाद के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस तरह की आतंकवादी गतिविधियों से भारत की पंथनिरपेक्ष राष्ट्र की छवि धूमिल होती है। यह भारत की 'सर्वधर्म समभाव' व 'वसुधैव कुटुम्बकम' के मूल्यों के विरुद्ध भी है। इससे भारत की सम्प्रुभत्ता, अखंडता व लोकतंत्र को भी खतरा है।

कश्मीर में पिछले कुछ दशकों से चल रहे आतंकवाद ने कश्मीरी पंडितों को कश्मीर में अपना घर-कारोबार छोड़कर भारत में ही शरणार्थियों का जीवनयापन करने के लिए मजबूर कर दिया है।

भारत में मुंबई बम विस्फोट, अक्षरधाम मंदिर पर आतंकवादी हमला, कंधार विमान अपहरण कांड, 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला आदि अनेक आतंकवादी बड़ी गतिविधियाँ पूर्व में घटित हो चुकी हैं।

कभी-कभी आतंकवादी धर्म के नाम पर कार्यवाहियाँ करते हैं। आतंकवाद लोगों का सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त करता है। देश की सामाजिक, आर्थिक विकास की प्रक्रिया को अवरुद्ध करता है। भारत सरकार एवं जनता ने हमेशा आतंकवाद का विरोध किया है। भारत अपनी एकता और अखंडता को सुरक्षित रखने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला कब हुआ था–
   - क. 10 दिसम्बर 1999
   - ख. 11 सितम्बर 2001
   - ग. 11 नवम्बर 2002
   - घ. 13 दिसम्बर 2001
2. अलकायदा क्या है–
   - क. एक राजनीतिक दल
   - ख. एक आतंकवादी संगठन
   - ग. एक पत्रिका
   - घ. उपरोक्त में से कोई नहीं

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. पर्यावरण किसे कहते हैं?
2. आतंकवादी अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कौन-सा तरीका अपनाते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. उदारीकरण का क्या अर्थ है?
2. ध्वनि प्रदूषण किस प्रकार होता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. जल को प्रदूषित करने वाले प्रमुख स्त्रोतों का वर्णन कीजिए।
2. जल एवं वायु प्रदूषण को रोकने के उपाय बताइए।
3. आतंकवादी समस्या पर लेख लिखिए।
4. वैश्वीकरण के प्रभावों का वर्णन कीजिए।

प्रायोजना कार्य–

- पर्यावरण प्रदूषण के कारणों व मानव जीवन पर उसके दुष्प्रभाव को आधार बनाकर कक्षा में नाटक का मंचन कराएँ तथा उसे रोकने के उपाय बताएँ।